International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-10-2025, Accepted: 27-11-2025, Published: 12-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 59-60

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण

रचना यादव[1], डॉ. निशा जैन[2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज़, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (DAVV), इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध निर्देशक, समाजशास्त्र विभाग, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज़, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (DAVV), इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) विश्व में सामाजिक और आर्थिक विकास का सबसे प्रभावशाली साधन बन चुकी है। ग्रामीण भारत में यह तकनीक महिलाओं को ज्ञान, अवसर, डिजिटल सेवाओं, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता से जोड़कर लैंगिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह शोध–पत्र ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका का विश्लेषण करता है।

अध्ययन से पता चलता है कि IT के माध्यम से महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम होती हैं, डिजिटल ज्ञान प्राप्त करती हैं, सामाजिक निर्णयों में सहभागिता बढ़ाती हैं और स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों तक आसानी से पहुँच बनाती हैं। साथ ही, डिजिटल विभाजन, तकनीकी प्रशिक्षण की कमी, सामाजिक प्रतिबंध, भाषा की समस्या और साइबर–सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ अभी भी प्रमुख बाधाएँ हैं।

शोध निष्कर्ष बताता है कि ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के लिए डिजिटल समावेशन (Digital Inclusion) अत्यंत आवश्यक है।

मूल शब्दः ग्रामीण भारत, महिला सशक्तिकरण, डिजिटल समावेशन, डिजिटल विभाजन, आर्थिक स्वतंत्रता

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है—महिलाओं को निर्णय लेने की शक्ति, संसाधनों पर नियंत्रण, स्वतंत्र पहचान, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक–राजनीतिक जीवन में समान अवसर देना। ग्रामीण भारत में महिलाएँ सामाजिक परंपराओं, लैंगिक असमानताओं, आर्थिक निर्भरता, सीमित शिक्षा और तकनीक की कमी के कारण अधिक वंचित रहती हैं।

आज सूचना प्रौद्योगिकी—स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल बैंकिंग, ई–गवर्नेंस और ऑनलाइन लर्निंगकृने महिलाओं के जीवन में परिवर्तन के नए रास्ते खोले हैं। IT के माध्यम से महिलाएँ घर बैठे सीख सकती हैं, अपना व्यवसाय चला सकती हैं, सरकारी सेवाएँ प्राप्त कर सकती हैं और सामाजिक रूप से सक्रिय हो सकती हैं।

यह शोध ग्रामीण महिलाओं के जीवन में IT की भूमिका, उसके प्रभाव, उपलब्ध अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण करता है।

साहित्य समीक्षा

कई शोधों और रिपोर्टों में ICT के महिला सशक्तिकरण पर सकारात्मक प्रभाव का उल्लेख किया गया है—

यूनेस्को (2020): ICT शिक्षा में लैंगिक अंतर को कम करता है।

विश्व बैंक (2021): डिजिटल पहुँच महिलाओं की आर्थिक सक्रियता को बढ़ाती है।

UN Women (2022): डिजिटल मंच महिलाओं में सामाजिक जागरूकता और आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।

भारत के अध्ययन: आत्म–सहायता समूह (SHG), कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों ने ग्रामीण महिलाओं की डिजिटल पहुँच बढ़ाई है।

हालाँकि, डिजिटल साक्षरता की कमी, नेटवर्क समस्याएँ, सामाजिक प्रतिबंध, और साइबर–सुरक्षा जोखिम अभी भी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका का अध्ययन करना।
2. यह पहचानना कि IT किन–किन क्षेत्रों में महिलाओं के विकास में योगदान देता है।
3. ग्रामीण महिलाओं द्वारा IT उपयोग में आने वाली चुनौतियों को समझना।
4. डिजिटल समावेशन को बढ़ाने हेतु सुझाव प्रदान करना।

शोध पद्धति

शोध स्वरूप: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive – Analytical)

डेटा के स्रोत

प्राथमिक डेटा: ग्रामीण महिलाओं के साथ अनौपचारिक साक्षात्कार और अवलोकन।

द्वितीयक डेटा: विभिन्न शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्टें, UN डॉक्यूमेंट, PMGDISHA रिपोर्ट आदि।

नमूना चयन तकनीक: प्रयोजनमूलक नमूना (Purposive Sampling)

विश्लेषण के उपकरण: प्रतिशत विश्लेषण, विषयवस्तु विश्लेषण, और वर्णनात्मक व्याख्या।

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकी ने आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को मजबूत किया है।

आर्थिक सशक्तिकरण (Economic Empowerment)

1. डिजिटल उद्यमिता (Digital Entrepreneurship)

- WhatsApp Business, Instagram, YouTube, Facebook के माध्यम से महिलाएँ घरेलू उत्पाद बेचती हैं।
- हस्तशिल्प, पिकल्स, सिलाई–कढ़ाई, ब्यूटी वर्क जैसे व्यवसायों का विस्तार।

2. ऑनलाइन आय के अवसर

- ऑनलाइन ट्यूशन, खाना बनाना, सिलाई/फैशन डिज़ाइनिंग क्लासेस, कंटेंट क्रिएशन आदि।

3. डिजिटल बैंकिंग
- UPI (BHIM, Google Pay आदि) से आर्थिक स्वतंत्रता एवं वित्तीय प्रबंधन।

4. डिजिटल स्किल डेवलपमेंट
- सरकारी व NGO कार्यक्रम महिलाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाते हैं।

शैक्षिक सशक्तिकरण (Educational Empowerment)
1. ऑनलाइन लर्निंग
- SWAYAM, DIKSHA, Coursera, YouTube आदि प्लेटफॉर्म।

2. वयस्क शिक्षा
- मोबाइल ऐप के माध्यम से साक्षरता में वृद्धि।

3. कौशल शिक्षण
- मार्केटिंग, सिलाई, क्राफ्ट, ब्यूटी केयर आदि के ऑनलाइन कोर्स।

सामाजिक सशक्तिकरण (Social Empowerment)
1. जागरूकता में वृद्धि
- अधिकार, सरकारी योजनाएँ, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि की जानकारी।

2. सामाजिक नेटवर्क विस्तार
- महिलाएँ देश–विदेश की महिलाओं से जुड़कर प्रेरणा लेती हैं।

3. आत्मविश्वास एवं निर्णय क्षमता
- डिजिटल ज्ञान से सामाजिक स्थिति मजबूत होती है।

राजनीतिक सशक्तिकरण (Political Empowerment)
1. ई–गवर्नेंस सेवाएँ
- दस्तावेज़, प्रमाणपत्र, शिकायत, सरकारी योजनाओं तक डिजिटल पहुँच।

2. पंचायती राज में सहभागिता
- महिलाएँ शासन प्रक्रियाओं को समझ पाती हैं और निर्णय लेती हैं।

स्वास्थ्य सशक्तिकरण (Health Empowerment)
1. टेलीमेडिसिन
- ऑनलाइन डॉक्टर परामर्श, स्वास्थ्य जानकारी।

2. स्वास्थ्य जागरूकता
- मातृ स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल, पोषण और टीकाकरण से संबंधित जानकारी।

3. स्वास्थ्य योजनाओं की डिजिटल पहुँच
- Ayushman Bharat, CoWIN आदि ऐप।

ग्रामीण महिलाओं द्वारा IT उपयोग में आने वाली चुनौतियाँ
1. डिजिटल साक्षरता की कमी
2. पारिवारिक/सामाजिक प्रतिबंध
3. नेटवर्क समस्याएँ
4. आर्थिक सीमाएँ
5. भाषा अवरोध
6. साइबर अपराध एवं ऑनलाइन सुरक्षा
7. प्रशिक्षण केन्द्रों की कमी

शोध के प्रमुख निष्कर्ष
IT उपयोग करने वाली महिलाओं में आत्मविश्वास अधिक पाया गया। डिजिटल प्लेटफॉर्म से आय के अवसर बढ़े। सोशल मीडिया से सामाजिक जागरूकता और जानकारी में वृद्धि हुई। युवा महिलाएँ डिजिटल कौशल सीखने के लिए अधिक उत्साहित हैं। सबसे बड़ी समस्या—डिजिटल प्रशिक्षण की कमी और लैंगिक सामाजिक बाधाएँ। सरकारी योजनाएँ सभी तक समान रूप से नहीं पहुंच पा रही हैं।

सुझाव
1. प्रत्येक गाँव में डिजिटल साक्षरता केन्द्र स्थापित किए जाएँ।
2. महिलाओं के लिए सस्ते स्मार्टफोन और इंटरनेट पैक उपलब्ध कराए जाएँ।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क सुविधाएँ सुधारी जाएँ।
4. सभी डिजिटल सामग्री हिंदी और स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराई जाए।
5. साइबर सुरक्षा पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
6. महिला प्रशिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए।
7. SHG और महिला उद्यमियों को डिजिटल मार्केटिंग का प्रशिक्षण दिया जाए।

निष्कर्ष
सूचना प्रौद्योगिकी ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन है। यह आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्रों में नई संभावनाएँ प्रदान करती है।
हालाँकि चुनौतियाँ मौजूद हैं—डिजिटल साक्षरता, सामाजिक प्रतिबंध, नेटवर्क और सुरक्षा—लेकिन उचित नीतियों, प्रशिक्षण और सुविधाओं के माध्यम से IT ग्रामीण महिलाओं के जीवन को पूरी तरह बदल सकती है।
यह स्पष्ट है कि 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण का आधार डिजिटल सशक्तिकरण ही है।

संदर्भ सूची
1. UNESCO (2020). ICT for Education.
2. World Bank (2021). Digital Economy Report.
3. UN Women (2022). Gender and ICT.
4. PMGDISHA – Digital Literacy Mission Reports.
5. विभिन्न शोध–पत्र एवं सरकारी प्रकाशन।